REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

पाली त्रिपिटक में वर्णित मगध के प्रमुख नगरों एवं ग्रामों का सर्वेक्षण

सुधा कुमारी
शोध छात्रा , प्राचीन इतिहास विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया।

प्रस्तावना

पाली त्रिपिटक का अर्थ होता है। मगध के प्रमुख धर्म का ग्रन्थ माना जाता है। जिसे सभी बौद्ध सम्प्रदाय (महायान, थेरवाद, बज्रयान आदि) मानते है। यह बौद्ध धर्म के प्राचीन ग्रन्थ हैं, जिसमें भगवान बुद्ध के उपदेश संग्रहीत है। यह ग्रन्थ पालि भाषा में लिखा गया हैं और विभिन्न भाषाओं में अनुवादित है। इस ग्रन्थ में भगवान बुद्ध द्वारा दिए हुए प्रवचनों को संग्रहित किया गया है। त्रिपिटक का रचनाकाल या निर्माण काल हुआ पूर्व 100 से ईसा पूर्व 500 है। बुद्ध के नैतिक उपेदेशों में शील पर बहुत जोर दिया गया है। नैतिक आचरण के लिए निम्नलिखित दस शीलों का पालन करना आवश्यक बतलाया गया है।

(क) दुसरो की समाप्ति की चाह न करना।
(ख) हिंसा न करना।
(ग) झूठ न बोलना।
(घ) मादक द्रव्यों का सेवन न करना।
(ड़) व्यायिचार न करना।
(च) गाने–बजाने में भाग न लेना।
(छ) सुगन्धित पदार्थों, फूलों आदि का प्रयोग न करना।
(ज) कुसमय भोजना न करना।
(झ) आराम देने वाली चारपाई पर न सोना और
(ञ) रुपया पैसा न ग्रहण करना और न रखना था।

1. बौद्ध धर्म भारत की भ्रमण परम्परा से निकला धर्म और महान दर्शन है। इसा पूर्व 6वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म की स्थापना हुई है। बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध है। भगवान बुद्ध का अन्य 563 ईसा पूर्व में लुम्बिनी, नेपाल और महापरिनिर्वाण 483 ईसा पूर्व कुशीनगर भारत में हुआ था उनके महापरिनिर्वाण के अगले पाँच शताब्दियों में बौद्ध धर्म पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैला और अगले दो हजार वर्षों में मध्य, पूर्वी और पश्चिमी–पूर्व जम्बू महाद्वीप में भी फैल गया।

2. आज, हालाँकि बौद्ध धर्म में पाँच सम्प्रदाय है। भारतयान, हीनयान या थेरवाद, महायान, वज्रयान और नवयान परन्तु बौद्धधर्म एक ही है। किन्तु सभी बौद्ध सम्प्रदाय बुद्ध के सिद्धान्त ही मानते है। बौद्ध धर्म पुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म है। आज पूरे विश्व में लगभग 54 करोड़ लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी है जो पुनिया की आबादी 7वाँ हिस्सा है। भारत, नेपाल, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, रूस, ब्रुनेई, मलेशिया आदि देशों में थी लाखों और करोड़ों बौद्ध है।

3. त्रिपिटक बुद्ध धर्म का प्रमुख ग्रन्थ है। यह पालि भाषा में लिखा गया है। यह ग्रन्थ बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात बुद्ध के द्वारा दिया गया उपदेशों को सूत्रबद्ध करने का सबसे वृहद प्रयास है। बुद्ध के उपदेश को इस ग्रन्थ मे सूत्र (सूत) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सूत्रों को वर्ग (वग्ग) में बौद्धा गया है। वग्ग को निकाय

(सूतपिटक) में वा खण्ड में समाहित किया गया है। निकायों को पिटक में एकीकृत किया गया है। इस प्रकार से तीन पिटक निर्मित हैं जिन के संयोजन को त्रि–पिटक कहा जाता है।

पालिभाषा का त्रिपिटक थेरवादी (और नवयान) बुद्ध परम्परा में श्रीलंका, थाइलैण्ड, बर्मा, लाओस, कम्बोडिया, भारत आदि राष्ट्र के बौद्ध धर्म अनुयायी पालना करते है। पालि के त्रिपिटक को संस्कृत में भी भाषान्तरण किया गया है। जिस को त्रिपिटक कहते है। संस्कृत का पूर्ण त्रिपिटक अभी अनुपलब्ध है। वर्तमान में संस्कृत त्रिपिटक प्रयोजन का जीवित सिर्फ नेपाल के नेवार जाति में उपलब्ध है। इसके अलावा तिब्बत, चीन, मंगोलिया, जापान, कोरिया, वियतमान, रूस आदि देश में संस्कृत मूल मंत्र के साथ में स्थानीय भाषा में बौद्ध साहित्य परम्परा मानना करते है।

4. बौद्ध धर्म में संघ का बड़ा स्थान है। इस धर्म में बुद्ध, धम्म और संघ को त्रिरत्न कहा जाता है। संघ के नियम के बारे में गौतम बुद्ध ने कहा था कि छोटे नियम भिक्षुगण परिवर्तन कर सकते है। उनके महापरिनिर्वाण पश्चात संघ का आकार में व्यापक वृद्धि हुआ। इस वृद्धि के पश्चात विभिन्न क्षेत्र, संस्कृति, सामाजिक अवस्था दीक्षा आदि के आधार पर भिन्न लोग बुद्ध धर्म से आबद्ध हुए और संघ का नियम धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगा। साथ ही में अंगुत्तर निकाय के कालाम सूत्त में बुद्ध ने अपने अनुभव के आधार पर धर्म पालन करने की स्वतंत्रता दी है। अतः विनय के नियम में परियोजन/परिवर्तन, स्थानीय सांस्कृतिक/भाषिक पक्ष, व्यक्तिगत धर्म का स्वतंत्रता धर्म के निश्चित पक्ष में ज्यादा या कम जोड़ा आदि कारण से बुद्ध धर्म में विभिन्न सम्प्रदाय या संघ में परिभाषित हुए। वर्तमान में, इस संघ में प्रमुख सम्प्रदाय या पंथ थेरवाद, महायान और बज्रयान है। भारत में मानवतावादी और विज्ञानवादी है।

5. बुद्ध का वास्तविक नाम सिद्धार्थ है। उनका जन्म कपिलवस्तु (शाक्य महाजनवाद की राजधानी) के पास लुबिंनी (वर्तमान में पक्षिणी मध्य नेपाल) में हुआ था इसी स्थान पर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक ने बुद्ध की स्मृति में एक स्तम्भ बनाया था। सिद्धार्थ के पिता शाक्यों के राजा शुद्धोधन थे। परंपरागत कथा के अनुसार सिद्धार्थ की माता महायाया उनके जन्म के कुछ देर बाद मर गयी थी कहा जाता है, कि उनका नाम रखने के लिए 8 ऋषियों को आमंत्रित किया गया था, सभी ने 2 संभावनाये बताई थी। बीस वर्ष के आयु होने पर शाक्य–तरूण को शाक्य संघ में दीक्षित होकर संघ का सदस्य बने हुए 8 व्यतित हो चुके थे वे संघ के अत्यन्त समर्पित और पक्के सदस्य थे।

6. प्रचार कार्य :– ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध अपने ज्ञान का प्रचार करके अपने नये आदर्श को संसार में फैलाना चाहते थे सबसे पहले वे उन पाँच पुराने साथियों से मिलना चाहते थे जो उन्हें पथभ्रष्ट समझकर छोड़कर चले गये थे। उनसे मिलने वे सारनाथ पहुँचे और अपना पहला उपदेश उन्हीं साथियों को दिया, उनका प्रथम उपदेश धर्म चक्र प्रवर्तन के नाम से विख्यात हो इसके पश्चात् अपने साथियों के साथ बुद्ध वाराणसी गये और वहाँ एक धनी सेठ के पुत्र को तथा अन्य उनके लोगों को अपना शिष्य बनाया। वाराणसी से बुद्ध राजगृह पहुँचे। एक बार बुद्ध कपिलवस्तु भी गये और अपने परिवार के अनेक सदस्यों को जिसमें उनका पुत्र राहुल तथा विमाता महाप्रजापति गौतमी सम्मिलित थी, अपना अनुयायी बनाया, वैशाली में भी बुद्ध ने कुछ समय बिताया वही पर उन्होंने गौतमी के अनुरोध करने पर भिक्षुणियों का एक संघ बनाने की आज्ञा दे दी। अपने एक शिष्य को उन्होने भेजा जिसने अवर्तन में कुछ लोगों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।

7. बुद्ध की शिक्षाएँ :– गौतम बुद्ध के सिद्धांत को समझने के पूर्व यह जान लेना आवश्यक है। कि वे ईश्वर में विश्वास नहीं रखते थे, किसी ग्रन्थ को स्वतः प्रमाण नहीं मानते थे तथा जीवन प्रवाह को इसी शरीर पर परिमित नहीं मानते थे। महात्मा बुद्ध ने सामाजिक ऊँच–नीच के प्रतिबंधों का कट्टरतापूर्वक खण्डन किया, उन्होंने छुआछुत की भावना को अत्याचारपूर्ण बतलाया उन्होने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र लोगों और उनसे भी निकृष्ट जातियों यहाँ तक कि वेश्याओं को भी अपना शिष्य बनाया। उनका कथन था कि किसी विशेष माता के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण मैं उसे ब्राह्मण नहीं कहूँगा। इस संबंध में बुद्ध से भेंट करने के लिए आये हुए दो ब्राह्मण को महात्मा बुद्ध ने किसी व्यक्ति को जन्म से अथवा कर्म से ब्राह्मण होने के संबंध में जो उपदेश दिये वे महात्मा बुद्ध के उपदेशों का मुल–मंत्र अहिंसा था।

8. दुःख सम्प्रदाय :– बुद्ध ने संसार के लोगों को केवल दुःख का ही बोध नहीं कराया। बल्कि उसका समुदायक भी बतलाया, संसार में जिन दुःखों का मनुष्य अनुभव करता है। उनका कोई न कोई कारण अवश्य होता है। इस प्रकार मृत्यु का कारण जन्म है। यदि आत्मा को नया शरीर धारण करने से मुक्ति मिल जाय तो

उसे मृत्यु का दुःख न भोगना पड़े। जिस प्रकार अनुभवी वैध रोग दूर करने के पहले कारण ढूँढ निकालता है। वैसे ही संसार–व्यापी दुःख का कारण भी बुद्ध ने खोज निकाला। मनुष्य अनेक इच्छाएँ करता है। जिसमें से कुछ इच्छाएँ अपूर्ण रह जाती है। जो मनुष्य प्राप्त करता है। उसका विरोध अथवा निवारण भी किया जा सकता है। यदि दुःख का कारण ही न रहे तो दुःख अपने आप दूर हो जायेगा। अविद्या के नाश से ज्ञान प्राप्त होता है। उसी ज्ञान को निर्वाण कहते है। इस प्रकार मनुष्य को जीवन में ही निर्वाण की प्राप्ति हो सकती है। किन्तु निर्वाण का अर्थ अकर्मण होना नहीं है। तो भी वह बन्धनों में नहीं फैस सकता तथा अन्त में उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है और आवागमन के चक्कर से मुक्ति मिल जाती है। सम्पूर्ण तृष्णा–क्षय और क्षय और दुःख रहित अवस्था का नाम निर्वाण है।

9. हीनयान और महायान सम्प्रदाय :– बौद्ध धर्म में कई परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगे और सिद्धान्तों में भिन्नता होने लगी। एक था महायान और दूसरा हीनयान।

महायान सम्प्रदाय का अभ्युदय कनिष्क के शासन काल में ही हुआ बौद्ध धर्म की यह शाखा हीनयान शाखा से भिन्न थी। बात ऐसी हुई कि बौद्ध सुधारकों ने अपने धार्मिक नियमों और सिद्धान्तों की कठोरता को कठ करने का प्रयास किया ताकि जनसाधारण सरलतापूर्वक बौद्धधर्म का आलिंगन कर सके। लेकिन जो लोग कट्टर बौद्ध थे वे किसी तरह के परिवर्तन के विरोधी थे। अतः मतभेद की खाई चौड़ी होने पर कट्टर अपरिवर्तन शील बौद्धों का परिवर्तन चाहने वाले नगर प्रकृति के बौद्ध मत–प्रचारकों से पृथक्करण हो गया।

10. जिनसे बौद्ध धर्म प्राचीन कठोर मार्ग का अनुसरण करने वाले कट्टर अपरिवर्तन शील बौद्धों के हीनयान तथा परिवर्तन के इच्छुक बौद्धों के महायान नामक दो प्रमुख सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। इस कारण महायान सम्प्रदाय मूलतः बौद्ध धर्म में संशोधनवाद का रूप था। यद्यपि यह दोनों सम्प्रदाय एक ही धर्म की दो शाखाएँ है। परन्तु उनमें कई भेद दृष्टिगोचर होते है।

11. हीनयान और महायान में अन्तर :–

बौद्ध धर्म के पाली त्रिपिटक में वर्णिक प्रमुख नगर सम्प्रदायों में गहरा मतभेद है। हीनयान सम्प्रदाय में बौद्धधर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध को मानव मानकर धर्म के शुद्ध एवं प्रारंभिक रूप को स्वीकार किया गया था।

अतएव, इसमें मूर्ति–पूजा, बुद्ध की प्रार्थना, कर्मकांड और अवतारवाद के लिए कोई स्थान नहीं था। इसमें भावनाओं को मान्यता नहीं दी गयी थी। फलतः यह सम्प्रदाय अधिक अनुसार कठोर तथा संकुचित दृष्टिकोण का तथा अनात्मावादी था। इसके धर्म–ग्रन्थ पालि भाषा के त्रिपिटक में वर्णित मगध में नगरों एवं ग्रामों का सर्वेक्षण लिखें गये थे। स्याम, लंका, बर्मा देशों में इसी मत का प्रचार हुआ।

12. इसके विपरीत महायान सम्प्रदाय में महात्मा बुद्ध के दिव्य आत्मा, ईश्वर ईश्वर का अवतार तथा भगवान मानकर उनके प्रति भक्ति प्रदर्शित की जाती थी। बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियाँ बनाकर उनकी प्राण–प्रतिष्ठा की जाती थी। धीरे–धीरे इस सम्प्रदाय ने मन्दिर बनाकर उसमें बुद्ध की मूर्तियाँ स्थापित की और उनके सम्मुख भेंट, उपहार आदि के रूप में मूल्यवान पदार्थ चढ़ाने की प्रथा प्रचलित होने लगी। इस प्रकार इस सम्प्रदाय में मूर्ति–पूजा, कर्मकांड, देवमण्डल और अवतारवाद का महत्त्व प्रदान किया जाने लगा। जिसमें यह सम्प्रदाय भवना प्रधान, आत्मवादी और उद्धार, दृष्टिकोण से युक्त हो गया तथा ब्राह्मण धर्म के निकट सम्पर्क में आने लगा। इस सम्प्रदाय के ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे जाने लगे। पार्श्व, अश्वघोष, नागार्जुन, वसुमित्र एवं शक्तिशाली सम्राट उस सम्प्रदाय का प्रोषण और समर्थन करने लगे। चतुर्थ बौद्ध धर्म की संगति में थी इसी मत को मान्यता प्रदान की गयी थी।

13. चीन, जापान और मध्य एशिया में अधिक हुआ था। इस सम्प्रदाय के अनुयायियों की संख्या करोड़ तक जा पहुँची और इसकी गणना संसार के प्रमुख धर्मो मे की जाने लगी। उन्होने संसार के दुःखों और आवागमन के फेर में पड़े हुए व्यक्तियों के दुःख दूर करके उन्हें दुःखी और मोक्ष प्राप्ति करा अधिकारी बनाना ही अपने जीवन का परम लक्ष्य बनाया।

14. हीनयान सम्प्रदाय केवल अपनी उन्नति और उद्धार पर बल देता है। जबकि महायान अपने उद्धार के साथ–साथ दूसरों के उद्धार के लिए भी प्रयत्नशील था। हीनयान प्राचीन नियमों को ज्यों का त्यों मानता है। जबकि महायान उनमें संशोधन करके उन्हें सरल बनाकर नगरों एवं ग्रामों का सर्वेक्षण पाली त्रिपिटक में वर्णित बौद्धधर्म सभी प्राणियों को निर्वाण प्राप्ति का सरल मार्ग बताता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

i. Hiriyanna, m, outlines of india philosophy (London : 1970).
ii. Radhakrishna. S. and C.A. more, A Soure Book of indian phi- losophy(Princeton:1957).
iii. Xakakusu, J. Essentials of Buddhist Philosophy (Honolulu : 1947).
iv. Menon, C.P.S. Ancioent Astronomy and Cosmology (London : 1931).
v. डॉ० अम्तेकर – काश्माइकेल लेक्वर्स, पृ0 58,
vi. B.C. Law - Geography of early Buddhism P.-23.
vii. Sharma, G.R. - Excavations at Kausambi, P.-60.

सुधा कुमारी
शोध छात्रा , प्राचीन इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया।